

मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में इतिहासबोध : एक समकालीन अध्ययन

डॉ. संजय वर्मा
एसोसियट प्रोफेसर
अँग्रेजी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964) आधुनिक हिंदी साहित्य के उन पुरोधा कवियों में से हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय समाज, संस्कृति और इतिहास का ऐसा समाहार प्रस्तुत किया है जिसे पढ़ कर पाठक राष्ट्र चेतना, ऐतिहासिक गौरव और सामाजिक जागरूकता को लेकर सहज ही प्रेरित होता है। मैथिलीशरण गुप्त जी को राष्ट्रकवि और मानवतावादी कवि के रूप में देखा जाता है। वे लगभग साठ वर्षों तक साहित्य-साधना में समर्पित रहे। यह वह दौर था जहाँ भारतीय जनमानस में एक ओर राजनीतिक स्वतंत्रता की आकांक्षा को लेकर संघर्षरत था, वहीं दूसरी ओर वह आत्म-चिंतन और सांस्कृतिक पुनरुत्थान की ओर भी अग्रसर था। ऐसे समय में गुप्त जी ने जो काव्य रचा, वह मात्र देश प्रेम या परंपरागत गौरव का चित्रण नहीं था, बल्कि वह एक सजग इतिहास-बोध और सांस्कृतिक आत्मालोचना का दस्तावेज़ भी था।

बीज शब्द : हिंदू, राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक चेतना, इतिहासबोध

सन् 1927 में प्रकाशित उनका काव्य-संग्रह ‘हिंदू’, इसी वैचारिक दृष्टि का प्रतिनिधि ग्रंथ है। यह संग्रह न तो हिंदू धर्म की निष्कलुष स्तुति है, न ही किसी वाद का प्रतिपादन; यह उस समाज का आत्मालोचनात्मक अध्ययन है जो अपने अतीत की छाया में वर्तमान को पहचानना चाहता है। इस संग्रह की भूमिका से ही स्पष्ट हो जाता है कि कवि केवल पौराणिक स्मृति के सहरे गौरवगान नहीं करना चाहता, बल्कि वह स्वर्गीय सौंदर्यबोध से इतर सामाजिक यथार्थ और नैतिक उत्तरदायित्व की खोज कर रहा है। गुप्त जी ने जिस गहराई से धार्मिक विकृतियों, सुंदरम् बनाम सत्यम्-शिवम्, सौंदर्य के विकेन्द्रित आदर्शों, और क्षमा बनाम न्याय जैसे प्रश्नों की स्थापना की है, वह स्पष्ट करता है कि ‘हिंदू’ केवल कविता नहीं, बल्कि एक वैचारिक क्रांति का प्रस्ताव है।

यह प्रस्तावना दर्शाती है कि मैथिलीशरण गुप्त का ‘हिंदू’ काव्य-संग्रह केवल एक साहित्यिक प्रस्थान नहीं, बल्कि “धर्म और इतिहास के बीच फंसे आधुनिक भारत की सांस्कृतिक त्रासदी और उसके पुनरुत्थान की चेतना” है।¹ यह संग्रह उन विचारों की खोज करता है जो मूल्यों की पुनर्परिभाषा, संस्कृति की पुनरुत्थान, और धर्म की आत्मचेतना को केंद्र में रखते हैं।

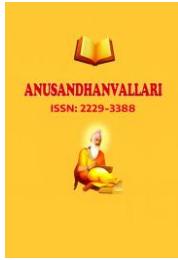
इस शोध का प्रमुख उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि मैथिलीशरण गुप्त के ‘हिंदू’ काव्य संग्रह में इतिहासबोध किस प्रकार अभिव्यक्त होता है? इस संग्रह में जिन ऐतिहासिक पात्रों व घटनाओं को प्रस्तुत किया गया है और उनका समकालीन सन्दर्भ में क्या अर्थ है? क्या यह काव्य केवल अतीत की स्मृति मात्र है या उसमें समकालीन राजनीतिक-सांस्कृतिक विमर्शों का भी संकेत निहित है?

यह शोध कार्य एक गुणात्मक (qualitative), वर्णनात्मक (descriptive) और विश्लेषणात्मक (analytical) पद्धति पर आधारित है। इसमें प्राथमिक स्रोत के रूप में ‘हिंदू’ संग्रह की कविताओं का गहराई से पाठ-विश्लेषण किया जाएगा। द्वितीयक स्रोत के रूप में आलोचनात्मक लेख, पत्र-पत्रिकाएँ, शोध-पत्र और ऐतिहासिक दस्तावेजों आदि का अध्ययन किया जाएगा।

अब तक गुप्त जी के काव्य पर मुख्यतः राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक चेतना, धार्मिक सौहार्द या उनकी भाषा शैली के दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है, परंतु उनके काव्य में इतिहास बोध तथा प्रयुक्त ऐतिहासिक पात्रों व घटनाओं पर केंद्रित गहन और समग्र अध्ययन दुर्लभ है। जो भी आलोचनाएँ हुई हैं वो या तो ‘भारत-भारती’ या यशोधरा या फिर ‘साकेत’ पर ही केंद्रित रहीं हैं जबकि ‘हिंदू’ जैसे महत्वपूर्ण काव्य पर केंद्रित आलोचनात्मक अध्ययन की स्पष्ट कमी दिखती है।

ऐतिहासिकता बोध साहित्य में एक ऐसी गहन अवधारणा है, जो किसी रचनाकार की उस अद्वितीय क्षमता को प्रदर्शित करती है, जिसमें वह ऐतिहासिक घटनाओं, पात्रों, और सांस्कृतिक परंपराओं को अपनी रचनाओं में इस प्रकार समाहित करता है कि वे न केवल अतीत को जीवंत करे बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी प्रासंगिक और प्रेरक भी बन जाये। यह बोध सिर्फ़ ऐतिहासिक तथ्यों और संदर्भों का कोरा संकलन मात्र नहीं है बल्कि एक ऐसी संवेदनशील चेतना है जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की सामूहिक स्मृति, परंपरा, संघर्ष, परिवर्तन और पुनरुत्थान को समझने की दृष्टि देता है।²

गुप्त जी के काव्य में ऐतिहासिकता बोध के सभी तत्वों का अनुपम समन्वय है। उनकी रचनाएँ भारतीय इतिहास के गौरवमयी काल, पौराणिक कथाओं की प्रासंगिकता, और स्वतंत्रता संग्राम की भावना को एक साथ बुनती हैं। उनकी बहुत सी रचनाओं का मूल कथानक ऐतिहासिक या पौराणिक ही है जैसे- यशोधरा, साकेत, जयद्रथ वध, पञ्चवटी, द्वापर, विष्णुप्रिया, जय भारत आदि। साथ ही अन्य रचनाओं में भी हमें उनकी इस चेतना का सटीक प्रयोग और उत्कृष्ट उदाहरण देखने को मिलता है। इतिहास-पुराण, मिथक, प्रतीक, रूपक उनकी लेखनी का पारस्पर्श पाकर अपनी जड़ता खो बैठता है और साहित्य कालजयी या क्लासिक शक्ति धारण कर लेता है।



हिंदू संग्रह की भूमिका में गुप्त जी का दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। उनका उद्देश्य भारतीय समाज को उनकी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत की याद दिलाना है, जो औपनिवेशिक दासता के कारण विस्मृति के गर्त में चरी गई थी। वे हिंदू धर्म को केवल धार्मिक मान्यताओं तक सीमित नहीं करते, बल्कि इसे एक ऐसी शक्ति के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जो सामाजिक एकता, राष्ट्रीय जागरण, और वैश्विक करुणा का आधार बन सकती है।

‘हिंदू’ संग्रह की सबसे बड़ी विशेषता उसका इतिहासबोध है जिसमें वह अर्जुन की दुविधा, मनु की चेतावनी, बौद्धों की क्षमा, ईसा की करुणा और गोरक्षा की विडंबना को उदाहरण बनाकर एक ऐसे धार्मिक समाज का चित्र प्रस्तुत करता है जो करुणा और कायरता के अंतर को नहीं समझ पा रहा। गुप्त जी करुणा पर प्रश्नचिह्न लगाते हुए यह बताते हैं कि स्वर्गीय भावुकता कभी-कभी सामाजिक निर्बलता बन जाती है।³

मैथिलीशरण गुप्त इतिहास को आत्मबोध और प्रेरणा का सशक्त स्रोत के रूप में देखते हैं। ‘स्मृति’, ‘विस्मृति’, ‘शौर्य-वीर्य’, ‘स्वाभिमान’, ‘महत्ता’ जैसी कविताओं में वह हिंदू समाज को अपने भुलाए हुए अतीत की ओर लौटने का आग्रह करते हैं वह अतीत जहाँ वेद, ऋषि, कर्म, तप और त्याग की ऊँचाइयाँ थीं, और जिसकी ध्वनि आज भी ‘आर्य’ शब्द में प्रतिध्वनित होती है। उदाहरण के लिए-

याद करो अपने को आर्य! सत्य करो सपने को आर्य!
तापों से अब तपो और न जीवन-मन्त्र जपो सब ठौरा।

xxx

तुम हो उनके ही कुलजात कि जो हुए ऋषि-मुनि विख्यात
जिनका त्याग और तप देख बदली स्वयं कर्म की रेख - स्मृति कविता

गुप्त जी की दृष्टि में इतिहास कोई निरपेक्ष दस्तावेज़ नहीं है, यह समाज को उसके स्वत्व की पहचान कराती है। ‘विस्मृति’ कविता में वे हिन्दू समाज से प्रश्न करते हैं- ‘होकर ऋषियों की संतान, सहते हो क्यों अपमान?’ यह प्रश्न केवल भावात्मक नहीं, एक ऐतिहासिक आह्वान भी है। ‘शौर्य-वीर्य’ खंड में गुप्त जी हिंदू इतिहास की एक विस्तृत झांकी के प्रस्तुत करते हैं जिसमें वे राम, मान्धाता, भीष्म, मौर्य, गुप्त, सिंकंदर, शक, हूण, विक्रमादित्य, महाराणा प्रताप आदि ऐतिहासिक चरित्रों के माध्यम से घटनाओं को पुनर्जीवित करते हैं। गुप्त जी स्पष्ट करते हैं कि जब सिंकंदर जैसा विश्वविजेता भारत से हारकर लौट गया, जब यूनान भी हिन्दू संस्कृतिपूरक विनम्रता के आगे नतमस्तक हुआ, तब यह भारतीय आत्मा ही थी जो विजयी थी। यहाँ इतिहास को राष्ट्र-बोध और आत्मगौरव की प्रेरणा के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।⁴

था वह किन धावों का दाह जिससे जला सिक्कन्दर शाह?

पूरी हुई न मन की चाह, ली घर की यमपुर की राह !

चढ़ कर आया था यूनान, लौट गया कर कन्या-दान !

बाँध आर्य-विक्रम का तून तुमने ही जीते शक-हूण। - ‘शौर्य-वीर्य’

हिंदू संग्रह में गुप्त जी ने वैदिक युग, रामायण, महाभारत, मौर्य-गुप्त काल, मुगल काल, मराठा काल, औपनिवेशिक शासन जैसे ऐतिहासिक संदर्भों का उपयोग बहुतायत में किया है। इतिहासबोध के इस स्वरूप में ‘हिंदू’ संग्रह गुप्तजी के लिए केवल संघर्ष और जयगाथा का पुलिंदा नहीं, बल्कि यह एक सांस्कृतिक उत्तराधिकार है, जो आज के हिन्दू को अपने स्वत्व की पुनर्जीवन करने के लिए प्रेरित करता है।

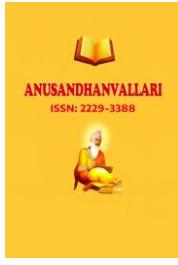
धरो राग निज; मेटो द्वेष; अंकित करो स्व-भाव स्व-वेष । - साधन

गुप्त जी का इतिहासबोध केवल आत्मगौरव तक सीमित नहीं है, वह अपने साथ आक्रान्ताओं के प्रति चेतना, प्रतिक्रिया और सांस्कृतिक प्रतिरोध का स्वर भी समेटे हुए है। ‘हिंदू’ संग्रह में उन्होंने विदेशी आक्रमणों का उल्लेख करते हुए यह स्पष्ट किया है कि हिन्दू समाज केवल सहिष्णु नहीं था, वह जागृत भी था, और जब आवश्यक हुआ, तब उसने संघर्ष भी किया। ‘आक्रमण’ कविता में गुप्त जी चीन, हूण, शक, रोमज, खुरज, तैतरिक, और यवद्वीप जैसे विदेशियों का जिक्र करते हैं जिन्होंने आर्यभूमि में प्रवेश किया। वे स्पष्ट करते हैं कि आर्य संस्कृति ने प्रारंभ में सर्वानुभूत, अध्यात्मिक अध्ययन, शिक्षार्थी भाव से उन्हें स्थान दिया, परंतु जब उनका स्वरूप राजनीतिक, विध्वंसकारी, कृतघ्न और लोतुप हो गया, तब हिन्दू समाज ने स्वरक्षा के लिए संगठित संघर्ष किया और स्वयं को पुनः समृद्ध किया।⁵

मिलती उहें जहाँ विश्रान्ति करने लगे वहीं वे क्रान्ति ।

किन्तु न थे हिन्दू, तुम हीन, संवत् साके चले नवीन।

पड़े हुए अस्त्रों की जंक पाकर अरि-मज्जा अकलंक



छूटी, प्रकटित हुआ प्रताप, रहा तुम्हारा पानी आप । - आक्रमण

इन विदेशी आक्रमणों के पीछे एक और उद्देश्य था - सत्ता और हथियार के बल पर धर्म का प्रसार करना। गुप्त जी इस मानसिकता का स्पष्ट विरोध करते हैं। 'धर्म-प्रचार' में वे लिखते हैं कि हिंदू समाज ने कभी भी धर्म के प्रचार हेतु हथियार नहीं उठाए। हिंदू समाज ने धर्म का प्रचार बुद्ध, महावीर, और रामकृष्ण परमहंस जैसे महापुरुषों के मूल्यों के माध्यम से किया। उसने धर्मिक सहिष्णुता, सामाजिक शांति और सांस्कृतिक उत्कर्ष के लिए प्रयास किया।⁶

प्रिय था तुमको धर्म-प्रचार, किन्तु नहीं लेकर हथियार।
उठते थे जब अपने हाथ, अभ्याशासन के ही साथ।

XXXX

आर्य वंश ही अतुल अखर्च कर सकता है इसका गर्व
कर करके सुख-शान्ति-विधान, किया उसी ने जगदुत्थान' - धर्म प्रचार

गुप्त जी के लिए यह सांस्कृतिक विस्तार राजनैतिक विजय नहीं, बल्कि आध्यात्मिक प्रभाव का प्रमाण है। वे यह भी स्मरण करते हैं कि यूरोप जिसे आज आधुनिक सभ्यता का केन्द्र माना जाता है, वह भारतीय ज्ञान परंपरा का ऋणी रहा है। वे यूरोप को शिष्यों का शिष्य बताते हैं ("यूरूप है शिष्यों का शिष्य")

गुप्त जी हिंदू संस्कृति की समृद्धि, व्यापकता और प्रभाव के विषय में लिखते हैं -
तिब्बत, श्याम, चीन, जापान, लंका, यबद्वीप, ईरान
काबुल, रूस, गोम, यूनान, कहाँ न थी आर्यों की आन ? - 'महत्ता'

दुनिया भर के सारे देश, रहे कभी आर्योपनिवेश - 'अपमान'

गुप्त जी का 'हिंदू' काव्य-संग्रह भारतीय इतिहास की केवल आक्रमण-प्रतिक्रिया तक सीमित नहीं रहता, वह उससे आगे बढ़कर धर्म और राजनीति के परिपक्व भारतीय स्वरूप की ओर भी सकेत करता है। 'राजनीति', 'धर्म प्रचार', 'महत्ता', 'धर्मनुशासन' जैसी कविताओं में वे भारतीय सभ्यता की अंतर्निहित शासन पद्धति, राजधर्म, नीति-विवेक और वैश्विक भूमिका को उजागर करते हैं। यह संग्रह उस समय लिखा गया जब औपनिवेशिक सत्ता भारतीयों को यह मानने को बाध्य कर रही थी कि राजनीतिक चेतना पश्चिम का उपहार है। इसके उत्तर में गुप्त जी ने रामराज्य, सभा-परिषदों और प्रजावत्सल शासकों की परंपरा को उद्धृत करते हुए दिखाया कि भारतीय राजनीति न केवल नैतिक, बल्कि सहभागी और कल्याणकारी भी रही है। गुप्त जी भारतीय प्रजातांत्रिक परंपरा का उल्लेख करते हुए लिखते हैं -

यहाँ पूर्व से ही सविवेक राजा-प्रजा प्रकृति थी एक।
तब तो राम-राज्य सुख भोग करते थे तुम हिन्दू लोग। - राजनीति

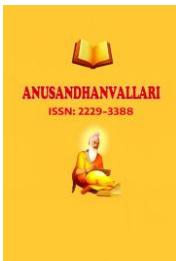
गुप्त जी ऐसे राष्ट्रकवि के रूप में उभरते हैं जो तत्कालीन सामाजिक-सांस्कृतिक तनावों को समझते हुए ऐतिहासिक विवेक के माध्यम से भविष्य की राह सुलझाने का प्रयास करते हैं। वे 'हिंदू' संग्रह में बार-बार आत्ममंथन, समन्वय, समरसता, स्वबोध, एकता और सहिष्णुता की बात करते हैं। यद्यपि गुप्त जी इतिहास की जटिलता को अस्वीकार नहीं करते, वे मंदिरों के विध्वंस, सांस्कृतिक हमलों, गौवध, मालाबार-कोहाट की हत्या आदि का उल्लेख तो करते हैं, परंतु साथ ही वे सामाजिक सौहार्द और नैतिक समता की पुकार भी करते हैं। वे मुसलमानों को याद दिलाते हैं कि वे इसी भूमि की सन्तान हैं -

रहे तुम्हारा कुछ भी बोध, हमको तुमसे नहीं विरोध।
मातृभूमि का नाता मान, हैं दोनों के स्वार्थ समान।
तनिक विचारो, न हो विरक्त, तुममें भी है हिन्दू रक्त।
यदि तुम भूलो न यह विवेक, तो हम तुम हैं कितने एक !
डालो अपने ऊपर दृष्टि, तुम अधिकांश यहीं की सृष्टि । - मुसलमानों के प्रति

यहीं बंधुता का भाव उनका अन्य समुदायों के प्रति भी रहा है। 'विश्व-बन्धुता' उनके काव्य-दर्शन की केंद्रीय चेतना रही है। वे मानते हैं कि भारत ने सदा से ही करुणा, सहिष्णुता और परस्पर-सम्मान के मूल्यों का प्रचार किया। यह भाव केवल एक आदर्श नहीं, एक ऐतिहासिक उत्तरदायित्व के रूप में सामने आता है।

विश्व-बन्धुता का बर्ताव, और परम करुणा का भाव,
फैलाया तुमने सब ओर; बढ़ा विश्व धन-धर्म बटोरा । - संदेश

गुप्त जी हिंदू धर्म की गौरवशाली परम्परा को महिमा के साथ प्रस्तुत करते हैं किंतु आँख मूँद कर नहीं। वे वर्तमान को साथ लेकर गौरवमय अतीत की झाकियां दिखाते हैं। वर्तमान अवनति के पीछे जो भी कारण रहे हैं उसकी वे ऐतिहासिक दृष्टिकोण से पड़ताल करते हैं।⁸ भारतीय समाज की विभिन्न समस्याओं जैसे जातीयता, अस्पृश्यता, रूढ़िया, मतभेद, अंधविश्वास, कर्तव्यीनता, मोह-मादकता आदि का उल्लेख किया है।⁹ यह कृति आस्था



के भीतर आलोचना का प्रकाशस्तम्भ बनकर उभरी है। 'अवनति के कारण' कविता में इस पर विस्तार से चर्चा करते हैं और बाहरी करको से ज्यादा स्वयं को जिमेदार मानते हैं। -

क्या है इस अवनति का मूल? अपने कर्म गये हम भूल।

खो बैठे अपना कुल-शील; पायी चंचल मन ने ढील। - अवनति के कारण

परंतु, गुप्त जी आशावादी हैं वे लिखते हैं हम अपने गौरव को पुनः प्राप्त कर सकते हैं। इस कविता में वे समाजोत्थान को विभिन्न साधनों की भी चर्चा करते हैं। इतिहास के एलबम से वे प्रताप, रानी पद्मिनी, शिवाजी, बाजीराव, छत्रसाल, गुरु गोविंद सिंह, महाराजा रणजीत सिंह, हकीकतराय जैसे महान व्यक्तित्व का उदाहरण देते हैं।¹⁰ साथ ही निराश- हतास भारतीय को आत्मबल, आशा और उत्साह का संदेश देते हैं -

न हो, बन्धुगण, न हो निराश, शून्य नहीं निज भाग्याकाश

अब भी शीतल नहीं कृशानु, उदित पूर्व ही में है भानु। - आशा

इस प्रकार 'हिंदू' केवल एक काव्य नहीं, बल्कि एक युगांधीक ग्रंथ है, जो भारत के ऐतिहासिक पात्रों, घटनाओं, विचारों और मूल्य-प्रणालियों को वर्तमान चेतना से जोड़ता है। कृष्णदत्त पालीवाल लिखते हैं कि युग का ऐसा काव्यात्मक इतिहास लिखने वाला आज के समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री, इतिहास और संस्कृतवेत्ता को उस युग के लगभग सभी संदर्भों और आंदोलनों की नई सूझ दे सकता है। यह एक ऐतिहासिक घोषणापत्र भी है, जिसमें अतीत की स्मृति, वर्तमान की चुनौतियों और भविष्य की दिशा का सार्थक समन्वय प्रस्तुत किया गया है। गुप्त जी ने इतिहास को संग्रहालय की धूल भरी वस्तु नहीं माना, बल्कि उसे एक जीवंत प्रेरणा-स्रोत के रूप में प्रतिष्ठित किया। गुप्त जी ने जिस गहराई से धार्मिक विकृतियों, सुंदरम् बनाम सत्यम्-शिवम्, सौंदर्य के विकेन्द्रित आदर्शों, और क्षमा बनाम न्याय जैसे प्रश्नों की स्थापना की है, वह स्पष्ट करता है कि 'हिंदू' केवल कविता नहीं, बल्कि एक वैचारिक क्रांति का प्रस्ताव है।

¹ पालीवाल, कृष्णदत्त (2008), मैथिलीशरण गुप्त ग्रंथावली, खंड-1, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

² सिंह, बच्चन, (1999), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

³ पाठक, दान बहादुर, (1969), मैथिलीशरण गुप्त और उनका साहित्य, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा,

⁴ पालीवाल, कृष्णदत्त, (1987), मैथिलीशरण गुप्त प्रासंगिकता के अन्तःसूत्र, प्रथम संस्करण, सचिन प्रकाशन, नई दिल्ली

⁵ देवी, रामदुलारी, (1977), मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में नीति तत्व, प्रथम संस्करण, कल्पकार प्रकाशन, लखनऊ

⁶ नंदकिशोर नवल, (संपा.), (2014), मैथिलीशरण गुप्त (संचयिता), प्रथम संस्करण 2002, पहली आवृत्ति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,

⁷ रामधारी सिंह दिनकर, (2009), पन्त प्रसाद और मैथिलीशरण, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

⁸ राय, रामेश्वर, (1995). मैथिलीशरण गुप्त: व्यक्ति और काव्य. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

⁹ नांद्र, डॉ. (संपा.), (2010), हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, नई दिल्ली

¹⁰ चतुर्वेदी, रामस्वरूप, (2010), हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, चौबीसवां संस्करण, इलाहाबाद